चतुर्थ अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित राष्ट्रीय चेतना

चतुर्थ अध्याय

साठोत्तरी हिन्दी नाटको में चित्रित राष्ट्रीय चेतना

भूमिका

भारत पर हुए विदेशी आक्रमणों को परिलक्षित कर लिखे गए विवेच्य नाटकों में विदेशी आक्रमणों के साथ ही साथ साधारण जन जीवन की दशा को पिछले अध्याय में विवेचित किया गया हैं और उस अध्याय की अगली कड़ी विवेच्य नाटकों में चित्रित राष्ट्रीय चेतना को दर्शाना है। इसमें संदेह नहीं कि राष्ट्र संकल्पना आधुनिक मानव की एक उत्कृष्ट मनोवृत्ती है। और युध्दजन्य स्थिति में यह राष्ट्रीय भावना विविध प्रकार से किसी न किसी रूप में प्रकट होती है। प्रस्तुत अध्याय इस दिशा का सूचक है।

राष्ट्र

राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति "राजृदीप्तौ" धातु से सर्वधातुभ्यःष्ट्न" इस उणादि प्रत्यय के संयोग से "राजृशब्दे" अथवा "राजृशोभते" शब्द से बनी है। इसके अनुसार 'राष्ट्र' शब्द का अर्थ इसप्रकार किया जा सकताहै - "किसी प्रदेश के लोग एक विशिष्ट भाषा व्दारा जहाँ विचार-विनिमय करते हैं, वह स्थान विशेष राष्ट्र है।"[1] कुछ विव्दानों के मतानुसार "राष्ट्र" शब्द सर्वथा नविन है और उनके अनुसार यह अंग्रेजी के 'Nation' शब्द के पर्याय रूप से निर्मित कर लिया गया है। 'Nation' शब्द लैटिन भाषा के 'Natio' शब्द से उद्‌भूत माना गया है।

डॉ विभुराम मिश्र का मंतव्य है - "एक ऐसा जन समुदाय, जो एक निश्चित भू-भाग पर निवास करता हो, जिसकी अपनी सभ्यता तथा संस्कृति हो तथा जो

एकात्मता की प्रेम रज्जू से आबध्द हो, राष्ट्र है।"[2]

कृष्ण कुमारी कुंकुम के अनुसार - "भावात्मक एकता संस्कृति, सभ्यता एवं भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर सामूहिक जीवन का सुविकोसत एवं परिमार्जित रूप ही राष्ट्र के नाम से अभिहित है।"[3]

डॉ.शेखरचंद्र जैन का कथन है, "किसी भौगोलिक ईकाईपर बसा हुआ समुदाय जिसकी अपनी सभ्यता तथा संस्कृति हो, अपनी भाषा, धर्म और परंपरा हो तथा जिसकी अपनी राजनीतिक एकता और कानून हों वही राष्ट्र है।"[4]

डॉ. कमला कुमारी के शब्दों में, "पृथ्वी उसपर रहनेवाली जनता और उस जनता की संस्कृति तीनों जब एक-सूत्र में मिलते तभी राष्ट्र का जन्म होता है।"[5]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर राष्ट्र की निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई देती हैं -

1. समान शासन तंत्र का भाव और वर्तमान या अतित का वास्तविक रूप हो।
2. समुदाय का समुचित आकार होकर व्यक्तियों में पारस्पारिक संबंध हो।
3. निश्चित भू-भाग हो।
4. किसी एक हद तक सामान्य भावना और आकांक्षा हो जिसके कारण लोगों के सामने राष्ट्र की एक तस्वीर हो।[6]

संक्षेप में भौगोलिक एकता, जनगण की राजनीतिक एकता, सांस्कृतिक एकता का ही नाम राष्ट्र है।

राष्ट्रीयता

राष्ट्र के प्रति तीव्र एवं गहन अपनत्व और ममत्व की भावना से राष्ट्रीयता का जन्म हुआ है। राष्ट्रीयता एक सतत गतिशील घट है। राष्ट्रीयता के बारे में विभिन्न विचारकों की धारणाएँ दिखाई देती है -

विभुराम मिश्र के मतानुसार "राष्ट्रीयता का संबंध बाह्य शरीर अथवा जड़ भूमि भाग से न होकर आंतरिकता से होता है। कला में राष्ट्र की आत्मा उर्ध्वमुखी होती है। अतः व्यक्ति के मानसिक वाचिक और कायिक व्यापार व्दारा राष्ट्र की प्रगति और उत्थान के संयोजक तत्वों का समीकरण अर्थात राष्ट्रहित की भावना और उसका पोषण ही राष्ट्रीयता है।"[7] जीवनलता कालरा के शब्दों में "राष्ट्र से रागात्मक संबंध तथा उसकी समृध्दि, कल्याण एवं मंगल कामना ही राष्ट्रीयता की भावना हैं।"[8] डॉ. राधाकृष्णन का मंतव्य है, "राष्ट्रीयता का अर्थ तो यह है कि हम अपनी आत्मा के सम्मान तथा ईमानदारी की, यथा शक्ति रक्षा करें और समस्याओं को सुलझाने में अपने व्यक्तिगत ढंग को बनाए रखे।"[9]

संक्षेप में राष्ट्र में निवास करनेवाले लोगों की मानसिकता या मनोभावना या कर्तव्यपरायणता राष्ट्रीयता है।

भारत और जनतंत्र

जनतंत्र का अंग्रेजी पर्याय "डेमोक्रेसी" है। प्रयोग चिंतन के इतिहास में विभिन्न अर्थो में इसका प्रयोग किया है। वह समाज व्यवस्था और शासन प्रणालीका द्योतक माना जाता है। समाज व्यवस्था में समता और स्वतंत्रता की स्थापना से समाज को विशाल भातृत्व के रूप में बाँधा है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक न्याय की रचना के आधार पर शासन प्रणाली के रूप में जनतंत्र नैतिक आदर्शो की पूर्ति के लिए राज्य की संप्रभुता पर नियंत्रण करना चाहता है क्योंकि यह आदर्श जनता और समाज के बीच का जीवित विश्वास है। इसलिए वह जनता और समाजव्दारा ही इन आदर्शों के प्राप्ति का प्रयास करें यह महत्वपूर्ण हो जाता है।

"डेमोक्रेसी" में से "डेमो" का अर्थ है "जनता"। जिसमें समाज और जनता की प्रधानता को स्वीकार किया है। समाज की उच्चता शासन प्रणाली के रूप में ग्रहण की है। तो ग्रीस में राजनीतिक व्यवस्था के रूप में पाया है। ग्रीक जनतंत्र ने शासन काल में कठोरता और मानसिक शिथिलता का परिचय दिया है। महान ग्रीक विचारक प्लेटो का विश्वास शासन प्रणाली के औचित्य से ही उठ गया। मगर शिष्य अरस्तू ने विश्वास जगाने का प्रयास किया। जनतंत्र की पिछली भूल देखकर

अरस्तू ने मिश्रित शासन व्यवस्था को आदर्श माना है। व्यावहारिक आदर्श व्यवस्था को अंग्रेजी में पॉलिटी कहते हैं। इसके अनुसार शासन में गुण और संख्याका योग मिलता है। गुण प्राप्ती में समाज का उच्च कुल, बौध्दिक सहयोग मिलता हुआ दिखाई देता है। पाश्चात्य विव्दान अरस्तू के अनुसार - "व्यावहारिक आदर्श व्यवस्था में उच्चकुल और जनता का समन्वय किया है।"[10]

रोमन काल में सैध्दांतिक दृष्टि से जनता को अधिकारी स्त्रोत दिया गया था। मध्ययुग में राज्याभिषेक की शपथ ग्रहण करते समय जनता की शक्ति को उन्नत बनाने का प्रयास किया है। टयूटॅनिक जातियों से प्रभावित होकर सेंट टामस एक्युनास ने जनता को राजा से श्रेष्ठ बताकर वैधानिक राज्यतंत्र की व्यवस्था कों ही वांछनीय स्वीकार किया है। जनतांत्रिक विचारों की परंपरा की व्यवस्थित और संयत परिणती फ्रान्स राज्यक्रांति में (1789 ई.) दृष्टिगोचर होती है। फ्रान्स राज्यक्रांति ने सर्व प्रथम जनतंत्र को शासन प्रणाली का रूप न मानकर जीवन के व्यापक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित किया और तबसे लेकर आज तक जनतंत्र केवल राजनीतिक मूल्योंकी ही नहीं प्रस्तुत जीवन के व्यापक प्रतिमानों की समस्या हो गया है। मूलगत विशेषताएँ निश्चित विधि में बाँधी नहीं जा सकती। क्योंकि जनतंत्र के मूल्य राजनीतिक परिस्थितियों की सापेक्षता में आँके जाते हैं।

15 वीं, 17 वीं, 18 वीं शतीं में अनुबंध सिध्दांत व्दारा जनतंत्र व्यक्तिवाद से संबंधित व्यक्तिवाद परंपरा टूटकर समाष्टि का दर्शन हुआ। सैध्दांतिक स्तर पर जनतंत्र व्यष्टिवादी और समाष्टिवादी परंपराओं का प्रतीक है। व्यक्तिगत हित को प्रधान माना है। समाज केवल साधन का माध्यम है। समाष्टिवादी रूप में जनतंत्र समाज और सामूहिक जीवन के व्यक्ति से उँचा माना है। व्यक्ति समाज का एक अंग है। समाज से हटकर कोई अस्तित्व शेष नहीं है।

जनतंत्र राज्य की निरंकुशता के स्थान पर जनता की निरंकुशता की प्रतिष्ठा करता हैं। ऐसी व्यवस्था में व्यक्ति सामाजिक दासता में उतना ही बँधा है, जितना वह आधुनिक युग के प्रारंभ में राजाओं की दासता में था। कहा जाता है - "जनतंत्र का समाष्टिवादी रूप ही शुध्द और पूर्ण जनतंत्र है।"[11]समाष्टि में लीन होकर

व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का उज्वल और परिष्कृत रूप पाता है। जनतंत्र व्यक्ति को स्वच्छंदता न देकर उसके कर्मोंपर नैतिक बंधन लगाता है, उन बंधनों से उस परिस्थिति का जन्म होता हैं, जो सच्ची स्वतंत्रता के विकास के लिए आवश्यक है।

अब्राहिम लिंकन (1809 - 1869 ई.) कहते हैं - "जनतंत्र वह शासन है,जो जनता का है, जो जनता व्दारा होता है और जो जनता के लिए होता है, और जनतंत्रात्मक शासन प्रणाली को ठीक रूप में व्यक्त करता है।"[12]

जनतंत्र के दो प्रकार है -

1. परोक्ष
2. अपरोक्ष

अपरोक्ष जनतंत्र में जनता बिना किसी प्रतिनिधि संस्था के माध्यम से ही अपनी शासन प्रणाली संभालती है। उदा. ग्रीक नगर राज्य की कुछ व्यवस्था, आधुनिक युग की जेनेवा की शासन प्रणाली, व्यावहारिकता इसी पर आधारित है। देश की भौगोलिक परिधि छोटी और आज असंभव होने के कारण परोक्ष का प्रचलन हुआ है। हिन्दी में जनतंत्रात्मक साहित्य खड़ीबोली भारतेंदु युग से प्रारंभ हुआ है। साहित्य में राजनीतिक आदर्शो की पृष्ठभूमि में साहित्यकारों की देशप्रेम की भावना दिखाई देती है। विदेशी साहित्य की दासता की प्रतिक्रिया के रूप में इस "साहित्य" का जन्म हुआ। राष्ट्रवादी साहित्य जनतंत्रात्मक होता है। आधुनिक साहित्य में विभिन्न राजनीतिक आदर्शो को लेकर कला की निर्मिती हुई है। जिनमें शुध्द जनतंत्रात्मक मानने वाले कोई है। उदा. मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी उल्लेखनीय हैं।

राष्ट्रीयता

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में कर्तव्य का चित्रांकन किया गया है। समाज में हर आदमी को अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है। चाहे वह देश, घर, बेटा, बेटी का ही क्यों न हो? वांगचू एक चीनी जासूस है। वह आदिवासी दल का सरदार, दल के लोग और गोला-बारूद आदि की जानकारी हासिल

करना चाहता है। मगर भारतीय मातई बनाने के लिए तैयार नहीं। इसलिए उसे मारने के लिए आगे बढ़ता है। इतने में मातई का बड़ा बेटा नीमों छोटे भाई देवल को अपना जानी दुश्मन और गैंग का सरदार है,ऐसा बताकर वांगचू का साथ देता है और उससे मारने का तरीका सीखता है, ताकि देवल को मार सके। मगर नीमों देवल की तरफ बढ़ते-बढ़ते पलटकर चीनी वांगचू का खून करके अपना कर्तव्य निभाता है। मातई के शब्दों मे - "प्यार का खून करनेवाले दरिन्दे, तेरी यही सजा है। यही सजा है तेरी।"[13] चीनी फौजी वांगचू वास्तव में चीन का जासूस है। अतः नीमों व्दारा उसे मार डालने का प्रयास नीमों की राष्ट्रीयता का द्योतक है।

हर आदमी अपने कर्तव्य में सफल नहीं हुआ तो उसे कोई ना कोई सजा दी जाती है। गोगो गुरिल्ला आदिवासी दल का सरदार है। उसने देवल, शीकाकाई को रसद चौकीपर हमला करने के लिए भेजा था। मगर यह जानकारी दुश्मनों को पहले ही मालूम होने के कारण वह उसमें सफल नहीं हो सके। और बहुत देर तक वापस भी नहीं आए। भारतीय सैनिक जोरम गोगो को हमले के असफलता की जानकारी बताकर देवल को ढूँढने चला जाता है। इतने में वह दोनों आते हुए दिखाई देते हैं। तभी सरदार गोगो से मातई कहती है कि अपने कर्तव्य में भूल करनेवाले आदमी को सजा देनी चाहिए, चाहे वह मातई का बेटा ही क्यों न हो? यहाँ मातई का कर्तव्य दिखाई देता है। चीन के भारत पर हुए आक्रमण की युध्दजन्य स्थिति में पति-पत्नी का व्यक्तिगत प्रेम दूर रखकर राष्ट्रप्रेम को ही स्वीकारना चाहिए जो राष्ट्रीय सर्वस्व का एक अभिन्न घटक है।

"नेफा की एक शाम" में आदिवासी दल का चित्रण किया है। गोगो आदिवासी दल का सरदार है। सियाँग नदी का पुल पार करके दुश्मन पहाड़ की तरफ जाना ही चाहता था इतने में गोगो ने पुल उड़ाने का ही प्लान तैयार किया। भारतीय सैनिक देवल जिस्मपर पट्टियाँ बाँधकर मशीनगन उड़ाने में और गोगो, नीमों पुल उड़ाने में सफल होते हैं। भयंकर विस्फोट की आवाज सुनकर भारतीय मातई प्रसन्नता से पुल टूट गया, पुल टूट गया कहती रहती है।[14]

मातई की इस मनःस्थिति से - - - - - - - - एक आदिवासी बूढ़ी का राष्ट्रप्रेम प्रकट होता है। और अपने दोनों बच्चों तथा गुरिल्ला सरदार गोगो के प्रति भी उसकी ममता और उनकी बहादुरी के प्रति तन्मयता सहज ही दिखाई देती है।

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में हिंदू मुसलमानों में होनेवाली एकता की भावना दिखाई देती है। पाकिस्तान के मुजाहिद अपने कश्मीरी भाइयों को स्वतंत्र करने के लिए आए हैं। मगर भारतीय कश्मीरी मुसलमान पाकिस्तान मुजाहिदों की मदद न करते हुए भारतीय सैनिकों को बिना किसी की परवाह किए आवश्यक साहित्य हिंदुस्तानी फौजियों के मोर्चे पर पहुँचा रहे हैं। पाकिस्तानी मुजाहिद के शब्दों में - "यकीन नहीं होता है। मैं अपनी आँखों से देखकर आया हूँ जालिम खाँ कि मुजाहिदों की ही गोलियों की नहीं, पाकिस्तानी फौजियों के गोलों की भी परवाह किए बगैर 250 काश्मीरी मुसलमानों ने गोला बारूद, राशन, टट्टूओं का चारा, पानी और रसद का दूसरा सामान अपनी-अपनी पीठ पर लादकर हिंदुस्तानी फौजियों के मोर्चो पर पहुँचाया।"[15] इस प्रकार हम देखते हैं कि कश्मीरी मुसलमान सैनिक कश्मीर की हिफ़ाजत के लिए कश्मीर भारत का अविभाज्य घटक है, यह जानकर मातई के प्रति अपनी राष्ट्रीयता व्यक्त करते हैं।

पाकिस्तानी मौलवी अताउल्लाह पर शक होने के कारण भारतीय बोधासिंह उसे पकड़ लाता है। मौलवी अपने आप को खुदा का बंदा कह रहा है। भारतीय लोग किसी के साथ पहले दुश्मनी नहीं करते बल्कि हमेशा प्रेम भाव प्रकट करते हैं। वह दुश्मन के साथ भी बुरा बरताव नहीं करते। वास्तव में मौलवी अताउल्लाह पाकिस्तानी जासूस है। लेकिन वह "मौलवी" का चोला पहनकर भारत पाक युध्द में कूद पड़ता है। अतः मौलवी की पोल खुल जाने पर उसे गिरफ्तार किया जाता है और आखिर में अपनी पोल खुल जानेपर और अब जीने लायक कुछ न रहने पर वह खुदकशी करता है। सच्चे मौलवी के प्रति भारतीय प्रेम कर सकते हैं मगर झूठे मौलवी के प्रति नहीं। यही भारतीयों की भारतीयता है, राष्ट्रीयता है।

डॉ.रामकुमार वर्मा के "जय बाड़ला" नाटक में फौजी के साथ-साथ जवानों का कर्तव्य भी स्पष्ट हुआ है। ढ़ाका विश्वविद्यालय का छात्र धीरेंद्रनाथ छात्रावास में अत्याचार होने के बाद अपने आपको छुपाता हुआ पद्मा नदी के पास आ जाता है। मुक्ति फौज का स्वयंसेवक शिशिर दा उसे समझाने का प्रयास करता है कि जवानों का खून गर्म होने के कारण उसे हमेशा हिलोरे लेना चाहिए। यदि डरपोक बन गए तो बांगला देश का अपमान होगा। इसलिए बांगला देश में पाकिस्तानियों का सामना करने के लिए थोडे लोग ही क्यों न हो ?

उनका डटकर सामना करना चाहिए। तभी जवानों का कर्तव्य शिशिर दा के शब्दों में - "क्यों ? क्यों नहीं कर सकते ? एटम बम आकार में कितना छोटा होता है, लेकिन जब वह फूटता है तो बड़े से बड़े भूमि खण्डों में आग लग जाती है ? हम संख्या में भले ही कम हो, लेकिन अगर संगठित हो जाए तो बड़ी से बड़ी पाकिस्तानी सेना को धूल में मिला सकते हैं।"[16]

उपर्युक्त सभी बातें सुनकर धीरेंद्रनाथ मुक्ति फौज में समाविष्ट होकर सुधारानी के अपहरण का बदला लेना चाहता है। चिरसंगिनी बंदूक के सहारे पाकिस्तानियों को भस्म करके उसके प्रकाश में बाड़ला देश फिर से महानता का स्वर्ण शिखर देख लेगा, ऐसी मनोकामना व्यक्त करता है।

राष्ट्र-प्रेम : भारतीयों का भारत के प्रति

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में रिपोर्टर का कार्य अलग तरह से चित्रित किया है। कई रिपोर्टर ऐसे होते हैं कि प्रत्यक्ष स्थल न जाकर सुनी सुनाई बात जनता तक अखबार के माध्यम से पहुँचाना चाहते हैं, मगर रिपोर्टर विवेककुमार रॉय युध्दस्थल जाकर आँखो देखा हाल अखबार में छपवाना चाहता है। इसलिए मिलिट्री दफ्तर से इजाजत ले ली। मदद करना कर्तव्य होने के कारण सैनिक गुप्तचर विभाग के अधिकारी का राष्ट्रीय एकात्मकता के बारे में वक्तव्य देखिए - "क्यों नहीं, क्यों नहीं। तुम हमारे वीर सैनिकों के रक्त से अंकित देश भक्ति की आँसों-देखी छबियाँ इकट्ठी करने के लिए अपने प्राणों की बाज़ी

लगाने सीधे मोर्चे पर जा रहे हो, और मैं तुम्हारी यह छोटी-सी मदद नहीं कर सकता ? बन्धु यह स्वतन्त्र भारत का पहला युध्द है। इस युध्द का एक-एक सैनिक अपनी मातृभूमि के मान-सम्मान का पहरेदार है····सैनिक, नेता, शासक, पत्रकार, लेखक, किसान, मजदूर और व्यापारी - ये सब जैसे अलग-अलग डिपार्टमेण्ट है, मगर अधीन एक ही हेडक्वॉर्टर के हैं और वह हेडक्वॉर्टर है मातृभूमि।"[17] इसमें संदेह नहीं कि राष्ट्र किसी एक व्यक्ति का नहीं होता, राष्ट्र में निवास करने वाले सभी लोगों का होता है। रिपोर्टर भी राष्ट्र का एक सिपाही है, राष्ट्र का एक अभिन्न अंग है, सैनिक की भाँति वह भी एक सैनिक है, अतः उसका भी राष्ट्र के प्रति प्रेमभाव रहता है। उपर्युक्त वक्तव्य में रिपोर्टर विवेक का राष्ट्रप्रेम सहज ही दिखायी पड़ता है।

डॉ·शिवप्रसाद सिंह ने "घाटियाँ गूंजती है" नाटक में भिन्न लोगों के मन में होनेवाला राष्ट्र प्रेम स्पष्ट किया है। समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग रहते हैं, सभी में राष्ट्रप्रेम कूट-कूट भरा हुआ दिखाई देता है। तवाँग गाँव के चाय बाग में मजदूरी करके पेट पालनेवाला शीकू का बेटा टूरी कलकत्ता के बंक में चौकीदारी करने लगा है। उनका मित्र मुकुल गद्दार है। टूरी का मुकुल से मिलना शीकू को अच्छा नहीं लगता था। चीन भारत पर हमला करके सभी की कठिनाइयों को नष्ट करनेवाला है। यह जानकारी जब टूरी ने पिताजी को बताई तभी पिता शीकू बौखला उठा क्योंकि राष्ट्र के बारे में उसके मन में प्रेम भावना थी। उसे स्पष्ट करते हुए शीकू ने कहा - "टूरी हम सीधे-साधे लोग ठहरे। हम अपनी धरती को बेटी की तरह मानते हैं। धरती पर हमला करनेवाला हमारी बेटी पर हमला करता है। तुझे शरम नहीं आती, ऐसा सोचते।"[18]

यहाँ हम यह देखते हैं कि बाप और बेटे के विचारों में काफी अंतर है। बाप शीकू के विचारों में भारत राष्ट्र के प्रति अपार प्रेम है। यह ऐसा प्रेम है जैसा किसी बाप का अपने बेटी के प्रति सहजजात प्रेम। यहाँ यह भी स्पष्ट है कि युध्दजन्य स्थिति में पुरानी पीढ़ी राष्ट्रप्रेम से परिपूरित है वहाँ टूरी जैसी युवा-पीढ़ी देशद्रोही है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में हर आदमी के मन में राष्ट्रप्रेम ओतप्रोत भरा हुआ है। इसलिए सजग होकर अपना कार्य करते रहते हैं। तवाँग पर हमला करके चीनी सैनिकों ने पूर्ण रूपेन उसे तबाह कर दिया है। मगर कई ऐसे लोग होते हैं कि अपने राष्ट्र, गाँव को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। ऐसे ही बापू लामा के मन में भगवान के प्रति अटूट श्रध्दा थी इसलिए भगवान के पास से वह हिला तक नहीं। मगर दूसरी तरफ फौजियों की आहट सुनकर बापू लामा के बच्चे बेहोश हो गए। जिनमें से शीकाकाई होश आते ही स्वयं को बर्फिली प्रदेश में पाती है। जिन्दा लाश के समान वह मातई की झोपड़ी तक आ जाती है। उपर्युक्त जानकारी गोगो, देवल, मातई आदि को बताती है। तभी आदिवासी सरदार गोगो चीन आक्रमण के कारण फैले अंधकार को नष्ट करना चाहता है। देश के लिए मर मिटने के लिए भी तैयार होता है। आत्म बलिदान की भावना गोगो के शब्दों में "हर जगह उजाला होगा, देवल, हर अँधेरा कोना जगमगाएगा। शर्त यह है कि हम अपने खून से दूसरों की जिन्दगी के चिराग जलाएँ। और जब नई रोशनी जगमगाएगी तो बिछुडों की याद दूर की घाटियों में डूब जाएगी।"[19] गोगो एक भारतीय गुरिल्ला सरदार है और भारत पर हुए चीनी आक्रमण को हटाना और अपने देश की हिफाजत करना उसका उद्दिष्ट है। उपर्युक्त विचारों में सरदार गोगो का राष्ट्रप्रेम ओतप्रोत दिखाई देता है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में नारी के मन में भी देश के प्रति अपार श्रध्दा दिखाई देती है। भारत पहले से ही शांतिप्रिय देश है। वांगचू चीनी जासूस है। वह भारत का दुश्मन है। वह अपनी बात मानने के लिए तवाँग के भारतीय लोगों को मजबूर कर रहा है। क्योंकि न मिलनेवाला सुख, चैन भारतीयों को देना चाहता है। लेकिन मातई भी उनकी बात मानने के लिए इतनी भोली भाली नहीं। दिन में यदि अँधियारी काली रात है ऐसा कहा तो भी भारतीयों को क्या मानना पड़ेगा। मातई वांगचू के बात पर विश्वास न रखते हुए मन में होनेवाली देशप्रेम की भावना स्पष्ट करती है। वह अपने बड़े बेटे नीमों से स्पष्ट कहती है कि दूसरों द्वारा दी गई चीजें स्वीकारना ठीक नहीं,

अपने हिम्मत से, मेहनत से प्राप्त चीजों का ही स्वीकार करना चाहिए। स्वदेशी का स्वीकार करना ही उचित है।[20]

"नेफा की एक शाम" में फौजियों के कर्तव्य के बारे में जानकारी मिलती है। कोई भी फौजी बंदी बनकर रहना पसन्द नहीं करता। बल्कि अपने आप को छुड़ाकर देश के लिए जान न्योछावर करने के लिए भी तैयार होता है। ऐसा एक बंदी फौजी स्वयं को चुपके से छुड़ाकर पहाड़ की तरफ आ जाता है। मातई उसकी सेवा करती है। "बेचारा" कहते ही वह क्रोधित होता है क्योंकि कोई फौजी बेचारा नहीं होता। तूफ़ान आ रहा था, इसलिए पड़ाव की तरफ जाने से उसे मातई रोकती है। मगर दिल के तूफ़ान को कोई भी रोक नहीं सकता। दिल में उठा तूफ़ान फौजी के शब्दों में - "बर्फीले तूफ़ानों की कालीन पर हमारे पैर जलते नहीं, क्योंकि जो तूफ़ान हमारे दिलों में है, वह सबसे बड़ा है।"[21] यहाँ फौजी यह जानता है कि युध्दजन्य स्थिति में कोई भी भारतीय फौजी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटता है। युध्दजन्य स्थिति में वह दुश्मन का मुकाबला करना ही चाहता है और अपना राष्ट्रप्रेम व्यक्त करता है।

"नेफा की एक शाम" में वेश परिवर्तन करके भारतीय फौजियों को घेर लिया। उन्होंने उनका डटकर सामना किया लेकिन उनमें से एक फौजी चीनियों के हाथ लगा। वह अपने आपको बंदिगृह से छुड़ाकर मातई की झोपड़ी तक पहुँचता है। वह दुश्मन रूपी भेडिए को बाहर निकालकर ही चैन की साँस लेना चाहता है। मातई उन्हें बेटा कहकर उनकी पूछताछ करते हुए सेवा करती है। मगर उसके मन में धरती माँ के सिवा किसी के बारे में प्रेम की भावना नहीं यह उनके वक्तव्य से ही स्पष्ट होता है -"मत कहो मुझे बेटा। मैं किसीका बेटा नहीं, कोई मेरी माँ नहीं। सिर्फ एक माँ है जिसके सफेद बालों की मजबुती को संगीनो चुनौती दो गई है। हमें इन बालों की इस्पाती सख्ती का अहसास कराना हैं। सिर्फ उसी माँ के प्यार का हाथ मेरे सिर पर है, सिर्फ उसी के लिए मैं जिन्दा हूँ।"[22] यहाँ धरती का मतलब भारत भूमि है। भारत राष्ट्र है। फौजी का यह राष्ट्र प्रेम भारतीय फौजियों की उज्ज्वल परंपरा का द्योतक है।

"हाजीपीर का दर्रा" नाटक में भारत पर पाकिस्तान का आक्रमण करने के पीछे सिर्फ यही उद्देश्य था कि भारतीय मुसलमानों को सुख, चैन मिले। लेकिन

युध्द के समय भारतीय मुसलमान पाकिस्तान का साथ न देते हुए भारतीय सैनिकों को मदद करते हैं। यह देखकर पाकिस्तानी क्रोधित होते हैं। मगर भारतीय मुसलमानों के मन में गद्दारी की भावना नहीं यह यहाँ स्पष्ट हुई है।

आदमी हमेशा एक दूसरे के लिए जान देने को भी तैयार होते हैं। जिनमें से बाजासिंह एक है। वह एक भारतीय सैनिक जासूस है। रात-दिन दुश्मनों की जानकारी हासिल करता है। बाजासिंह और नौशर खाँ पासवाले गाँव के होने के कारण गाढ़े दोस्त हैं। मुल्क की रक्षा करते समय नौशेर खाँ के लिए वह कुरबान होना चाहता है।

भारतीय कश्मीर को पाकिस्तान के पंजे से छुड़ाने में कामयाब हुए हैं। टूटी हुई मजार की मरम्मत करके सजा रहे हैं। पंजाब के राजा रणजीत का नाम सुनते ही डाकू लुटेरे दुम पकडकर भाग जाते हैं, वैसे ही कनरैल साहब का नाम सुनकर पाकिस्तानी अपनी जान बचाने के लिए भाग गए हैं। कनरैल साहब का सिर ऊँचा रखने के लिए सभी जवानों ने जान की परवाह नहीं की। इसे वह कभी नहीं भूल सकते। यदि कोई जवान साथ न देता तो अकेले कनरैल कुछ भी नहीं कर सकते। कनरैल जवान बाघ के समान टूट पड़े है। पठानों के मन में भी देशप्रेम ओतप्रोत भरा हुआ है। उन्होंने अपने एखलाख की हिफाजत करके देशप्रेम की भावना प्रकट की है।

डॉ.रामकुमार वर्मा लिखित "जय बाड़ला" नाटक में ढाका शहर के धान मंड़ी के गली में गोलियों की वर्षा हो रही है। बेकसूर लोगों को मारना पाकिस्तान का आद्य कर्तव्य बना है। कभी न देखी हुई घटना घट रही है। इसलिए युसूफ की पत्नी फ़ातिमा और बेटी सकीना डर के मारे काँप रहे हैं। युसूफ घर नहीं इसलिए फ़ातिमा बहुत चिन्तित है। पाकिस्तान लोगों को यह बात भी सच नहीं लगी इसलिए सकीना को संगीन पर झेलने के लिए ले जाते हैं। बच्ची सकीना को न छोड़ते हुए फ़ातिमा को ही गोली का शिकार बनाया जाता है।

पूरे शहर में कर्फ्यू जारी होने के कारण रिपोर्टर मकसूद और युसुफ छिप जाते हैं, क्योंकि बाहर दिखाई देनेवाले लोगों की गोली को शिकार बनाया जाता था। छिपते-

छिपते यूसुफ घर पहुँचा मगर पूरा घर बरबाद हो गया था। इसलिए वह खुदकुशी करना चाहता है। यूसुफ के मन में देश प्रेम जगानेवाला शिशिर दा का वक्तव्य- "संभालों, यूसुफ।....इस तरह खुदकुशी करने से क्या होगा ? पाकिस्तानी खुश होंगे कि उनकी एक गोली बच गई....जो पाकिस्तानी सेना खून की प्यास में पागल हो गई है, उसकी प्यास में तुम खून का एक घूँट और भरोगे ? यूसुफ! क्या तुम इतने बुजदिल हो कि अपनी फ़ातिमा और सकीना के खून का बदला लिए बिना ही इस दुनिया से चले जाओ....."[23]

काज़ी नज़रूल इस्लाम से रविंद्रनाथ ठाकुर तक के लोगों ने देश के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का कार्य किया है। खुदकुशी करने का प्रयास किया तो सभी का अपमान होगा यह समझकर मुक्ति फौज में सम्मिलित होकर बांगला देश को आज़ाद करके सूरज की तरह बंगाल का नाम इतिहास में रोशन करना चाहता है।

राष्ट्रप्रेम - चीनियों का चीन के प्रति

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में देशप्रेम के बारे में विचार व्यक्त हुए हैं। हर आदमी को अपना देश प्यारा होता है। इसलिए हर एक के मन में देश के बारे में बुरे विचार कभी नहीं आते। वांगचू उगते हुए लाल सूरज के पास होनेवाला उन्नती प्रतीक देश चीन का निवासी है। चीन ने भारत पर आक्रमण किया है। उसी समय वांगचू को बारूद का टुकडा लगा है। पास होनेवाली झोपड़ी में मातई के पास जाकर वह बारूद का टुकड़ा निकाल लाता है। मातई ने घर के बारे में पूछताछ करते ही उन्होंने कहा कि हम ऐसे लोग हैं कि यदि दूसरों के घर को अपना घर समझ लिया तो अपने घर की हमें याद तक नहीं आती। हमारा हर काम अच्छा होता है। इसलिए हमारे देश में भूखा, बेकार, नंगा ऐसे कोई लोग नहीं। इसमें चीनी जासूस वांगचू और भारतीय आदिवासी महीला मातई के बीच हुए वार्तालाप से वांगचू का चीन के प्रति प्रेम प्रकट होता है -

"वांगचू : (कुटिलता से) हाँ हम हर आदमी को अपना दोस्त और हर घर को अपना घर समझते हैं।

मातई : यह तो बहुत अच्छा करते हो, बेटा! बहुत अच्छा करते हो।

वांगचू : हमारा हर काम अच्छा होता है, बूढी माँ! और इसलिए तो हमारे देश में कोई भूखा नहीं, कोई नंगा नहीं, कोई बीमार नहीं, कोई बेकार नहीं।

मातई : (आश्चर्य) अरे ओरे! तब तो तेरा देश दोनी पोलों के घर की तरह है। कैसे कर पाते हो यह सब ?

वांगचू : (गंभीरता से) गोली मारकर।

मातई : क्या मतलब ?

वांगचू : नंगे, भूखे, बेकारों को हम जान से मार देते हैं।

मातई : पर····पर···यह····यह तो तुम लोग अच्छा नहीं करते हो।

वांगचू : बूढी माँ, तुम बड़ी भोली हो। तुम नहीं जानती, हर पहेली का हल बंदूक की गोली में छुपा है।

मातई : अरे ओरे! तब तो तेरे देश में सब हत्यारे बसते हैं।

वांगचू : (डाँटकर) खामोश! मेरा देश और मेरे लोग सबसे ऊँचे हैं। वे एक दिन सब देशों के और सब लोगों के सरताज बनेंगे।"[24]

वांगचू का प्रेम एक तरफा है और चीन की साम्राज्यवादिता और आतंकवादिता का द्योतक है।

जन्मभूमि प्रेम

डॉ·शिवप्रसाद सिंह ने "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में जन्मभूमि के प्रति संस्कारक्षम विचार व्यक्त किया है। आदमी के मन पर सुसंस्कारित विचारों का प्रभाव होने के कारण किसी की भी बात मानने के लिए वह तैयार नहीं होते हैं। इसका उदाहरण ओब्राएन्स डैनिएल हैं, जो चीनी सैनिकों के आक्रमण के बाद भी अपने बोमदि ला को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। पहले सन 42 के मूवमेंट में कप्तान डैनिएल को निहत्थे भारतीयों पर गोली चलाने का हुक्म दिया मगर इस बात से वह सहमत न होने के कारण उन्होंने नौकरी से इस्तीफ़ा ही दे दिया। जिद्दी परिवार

यह उनके घराने की विशेषता थी। फादर पिंटो के शब्दों में - "आइरिश लोग किसी की आज़ादी कुचलने का पाप नहीं कर सकता।"[25]

फादर पिंटो के कहने में मुख्य प्रतिपाद्य यह है कि डैनिएल ओब्राएन्स आइरिश अर्थात विदेशी होने पर भी भारत के एक भू-भाग को अर्थात बोमदि ला को छोड़ने के लिए इसलिए तैयार नहीं होता है कि उसे ऐसा लगता है कि वह बोमदिला गाँव ही अब उसकी जन्मभूमि है। इस प्रकार नाटककार ने यह दर्शाया है कि भारत में जो कुछ विदेशी यहाँ के निवासी बन गए हैं वे अपने निवासस्थान को ही अपनी मातृभूमि या जन्मभूमि मानते हैं।

संतान को अपने माँ-बाप प्यारे होते हैं। वह अपने आँखों के सामने माँ-बाप की मृत्यू बिना वजह हो यह पसन्द नहीं करते। उसी प्रकार रोज़ एक ऐसी विदेशी बेटी है कि जो अपने पिता के बारे में उसके मन में स्नेह की भावना है। इसलिए बोमदि ला की तरफ परमीट लेकर चली जाती है, तो उन्हें घायल रूप में पिताजी मिलते हैं। लेकिन कई देर के पश्चात बातचीत करते हुए ही उनकी जान चली जाती हैं। जिस धरती की ममता में उन्होंने जान दे दी, वही उनके शरीर को दफ़न किया जाता है। इससे रोज का पिता प्रेम और ओब्राएन्स का जन्मभूमि प्रेम दिखाई देता है।

"नेफा की एक शाम" में मातई एक बूढ़ी आदिवासी है। जिसके दो बेटे सही अर्थ में देशप्रेमी हैं। चीन के आक्रमण से जब लोग अपने घरबार को छोड़कर दूसरी जगह जाते हैं तब मातई एक ऐसी बूढ़ी नारी है जो अपनी छोटी लेकिन प्यारी झोपड़ी को छोड़कर कहीं भी नहीं जाना चाहतीहै। और नहीं जाती है। उसका यह झोपड़ी प्रेम वास्तव में एक आदिवासी नारी का मातृभूमि के प्रति भी अटूट प्रेम है। और साथ ही साथ झोपड़ी न छोड़ते हुए वहाँ ठहरना और चीन के हमले में भारत की ओर से लड़ना, झगड़ना उसकी बहादुरी का ही द्योतक है। चीन के आक्रमण से जहाँ साधारण जनता भयभीत होती है, वहाँ आदिवासी बूढ़ी महिला दुश्मन का मुकाबला करती रहती है। इस दृष्टि से मातई का चरित्र एक अलग ढंग का चरित्र है।

मातई का बेटा देवल उसे जबरदस्ती उसकी झोपड़ी और गाँव के बाहर ले जाना चाहता है। लेकिन मातई इस बात से इन्कार करती है और उसे ही भाग जाने के लिए कहती है। मातई के शब्दों में - "दोनों पोलो ने अपने पास बुला लिया····और अब तू मुझे उसकी आखिरी निशानी से भी दूर करना चाहता है ? कान खोलकर सुन ले, यहाँ से मेरी लाश निकले।"[26]

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूंजती है" नाटक में गद्दारी को स्पष्ट किया है। महान सभ्यता, महान संस्कृति, अध्यात्मिक दृष्टि होनेवाले भारत में कई ऐसे लोग हैं कि भारतीय होकर भी लालची भावना के कारण देशद्रोह करते दिखाई देते हैं। बख्तावर शक की वजह से एक आदमी को पकड़ता है, क्योंकि उन्होंने हमेशा अपने नाम बदलकर भिन्न-भिन्न प्रकार का कार्य किया है। वह एक दिन रिसर्च के सिलसिले में म्यूज़ियम में चला गया था। वहाँ किसीको शक न हो इसलिए मूर्तियों को लगाई मूँछे अपने मूँछो पर लगाता है। मगर कलकत्ता पुलिस ने भेजे फोटो पर मूँछे नहीं हैं। यह देखकर कैप्टेन के मन में शक उदित होता है। वह सिर्फ चोर नहीं अव्वल दर्जे का देशद्रोही है यह साबित होता है। भारतीय होते हुए भारत के साथ गद्दारी की है, जो मिलेट्री आफ़िस में बम रखना, तेजपुर पानी टंकी में विष डालना, मिलेट्री कार्य का विवरण इकठ्ठा करना, आदिवासी लोगों में परचे बाँटना आदि कार्य से स्पष्ट होता है कि देशद्रोही का बड़ा गैंग तैयार हुआ है, जिनमें से किसीने से ला का गुप्त मार्ग चीन को बताया है। इस बात से मुकुल सहमत नहीं।

हर आदमी अपने कार्य को महत्वपूर्ण ही मानता है, चाहे सही हो, चाहे बूरा हो। प्रतिक्रियावादी सत्य और मनुष्यता की आड़ लेकर जब कार्य करता है तब उसे यह कार्य बूरा है ऐसे नहीं लगता। क्योंकि उनके मन पर पहले से ही प्रभाव डाला जाता है कि जो तुम कर रहे हो वह महत्वपूर्ण ही है। ऐसे कार्य करनेवाले लोगों की स्थिति "मान न मान मैं तेरा मेहमान" के समान होती है। इस तरह दूसरों को अपना समझकर मदद करनेवाले भारत में अनेक पागल लोग हैं जिन्हें देशद्रोही कहा जा सकता है।

"घाटियाँ गूँजती . हैं" नाटक में यह चित्रित किया है कि आदमी कभी-कभी अच्छा काम छोड़कर दूसरों की बातों में आकर बूरा कार्य करने लगता है। मगर वह उसकी दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है। शीकू का बेटा टूरॉं कलकत्ता बंक की नौकरी छोड़कर सड़क कूटने का कार्य कर रहा है। उसे शीकू ने समझाने का प्रयास किया मगर उन्होंने एक बात तक नहीं मानी। बार-बार चैन के दिन अब आयेंगे ऐसा कह रहा था। चीन ने आक्रमण करने के बाद मालूम हुआ कि मुकुल के साथ मिलकर उन्होंने देश के साथ गद्दारी की है। शीकू ने टूरॉं का चीनियों के साथ क्या संबंध है ? यह जानकारी हासिल की तभी शीकू का वक्तव्य - "मुझे मालूम हुआ सरकार कि टूरॉं गद्दार है। वह उन लोगों में शामिल हैं जो देश की आबरू बेचना चाहते हैं। हमारी धरती को दुश्मनो के आगे भेंट चढ़ाना चाहते हैं। वे लोग अपने फायदे के लिए दूसरों का गला काटना चाहते हैं।"[27] यहाँ हम देखते हैं कि जहाँ बाप देशप्रेमी है वहाँ बेटा देशद्रोही।

नि ष्क र्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि -

1. युध्दजन्य स्थिति में ही किसी देश की राष्ट्रीयता प्रचुर मात्रा में उभर आती है। चीन और पाकिस्तान के भारत पर हुए आक्रमणों से भारतीयों में राष्ट्रीयता का भाव बहुत बढ़ गया है। उसीको नाटककारों ने उचित रूप में चित्रित किया है।

2. विवेच्य नाटकों में राष्ट्रप्रेम के विविध उदाहरण सहज ही दिखाई देते हैं। भारतीयों का युध्दजन्य स्थिति में अपने राष्ट्र के प्रति जो अपार प्रेम उमड़ आता है। उसी को नाटककारों ने अच्छी तरह से व्यक्त किया है।

3. समाज के विविध स्तरों के लोगों में दिखाई देनेवाली राष्ट्रीयता को नाटककार ने शब्दांकित किया है। बच्चे से बूढ़े तक सबकी राष्ट्रीयता दिखाने में नाटककारों की प्रतिभा दर्शनीय है।

4. जहाँ आलोच्य नाटकों में राष्ट्रीयता और राष्ट्रप्रेम दिखाई देता है वहाँ अपनी जन्मभूमि अपना घरबार, अपनी बस्ती आदि के प्रति लोगों का प्रेम चित्रित किया गया है।

5. विवेच्य नाटकों में यह भी दर्शाया गया है कि भारत पर हुए विदेशी आक्रमणों का लाभ उठानेवाले और भारत को खतरे में डाल देनेवाले कुछ देशद्रोहियों के चित्र भी नाटककारों ने साकार किये हैं।

सं द र्भ

1. हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में राष्ट्रीय भावना - जीवनलता कालरा, पृ.10, प्र.संस्क.1976

2. राष्ट्रीयता और हिन्दी नाटक - डॉ.विभुराम मिश्र, पृ.4, प्र.संस्क.1973

3. निबंध संचयन - सम्पा.राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव, पृ.63, संस्क.अनुल्लेख्य, (कृष्णकुमारी कुंकुम लिखित "साहित्य और राष्ट्र" निबंध से उद्धृत)

4. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्यकला - डॉ.शेखरचंद्र जैन, पृ.2, प्र.संस्क.1973

5. सातवें दशक के हिन्दी नाटकों में राष्ट्रीय भावना - डॉ.चर्ल कमला कुमारी, पृ.2, प्र.संस्क.1991

6. राष्ट्रीयता और हिन्दी नाटक - डॉ.विभुराम मिश्र, पृ.2-3, प्र.संस्क.1973

7. वही, पृ.7

8. हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में राष्ट्रीय भावना - जीवनलता कालरा, पृ.9 प्र.संस्क.1976

9. सातवें दशक के हिन्दी नाटकों में राष्ट्रीय भावना - डॉ.चर्ल कमला कुमारी, पृ.5, प्र.संस्क.1991

10. हिन्दी साहित्य कोश भाग - 1 - प्रधान सम्पा.धीरेन्द्र वर्मा, पृ.331, द्वि.संस्क.सं.2020

11· वही, पृ·331

12· वही, पृ·331

13· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·74, सप्त संस्क·1980

14· वही, पृ·124

15· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·43-44, द्वि·संस्क·1970

16· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·56, प्र·संस्क·1971

17· घाटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·31, तृ·संस्क·1965

18· वही, पृ·116

19· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·42, सप्त·संस्क·1980

20· वही, पृ·62

21· वही, पृ·88

22· वही, पृ·89

23· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·25-26, प्र·संस्क·1971

24· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·54-55, सप्त·संस्क·1980

25· घाटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·40, तृ·संस्क·1965

26· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·59-60, सप्त·संस्क·1980

27· घाटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·117, तृ·संस्क·1965